IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा

सहायक प्रवक्ता, शिक्षा संकाय ,जी एल ए विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश:

भारत की शिक्षा प्रणाली प्राचीन समय से ही विश्व में विशेष स्थान रखती रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसमें वेद, उपनिषद, आचार्य, गुरु-शिष्य परंपरा और भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण शामिल हैं, ने न केवल भारत, बल्कि समस्त मानवता को अपने ज्ञान और संस्कृति से लाभ पहुँचाया है। 21वीं सदी में भारतीय शिक्षा प्रणाली में जो बदलाव आवश्यक थे, उन्हें ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** (NEP 2020) को प्रस्तुत किया। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः प्रतिष्ठित करने, उसे आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने और समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। इस शोध प्रपत्र में हम भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसके समावेश पर विस्तृत चर्चा की गयी है।

कुंजी शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आधुनिक शिक्षा, समग्र शिक्षा, योग, संस्कार, भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण

1.प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जिसकी शिक्षा परंपरा अत्यधिक समृद्ध रही है। प्राचीन काल में भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि मनुष्य के समग्र विकास, आत्म-निर्भरता, और सामाजिक दायित्वों का पालन करना था। भारतीय ज्ञान परंपरा ने वेदों, उपनिषदों, संस्कृत साहित्य, योग, दर्शन, और विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यह परंपरा न केवल भारतीय समाज की सांस्कृतिक नींव है, बल्कि वैश्विक मानवता के लिए भी प्रेरणा का स्रोत रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा, जो कि हजारों वर्षों पुरानी है, शिक्षा और संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा रही है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के अनुसार, यह न केवल मानसिक विकास, बल्कि व्यक्ति के आत्मिक और सामाजिक कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण थी। आधुनिक समय में, पश्चिमी शैक्षिक पद्धतियों के प्रभाव ने भारतीय शिक्षा को एक व्यावसायिक और सूचना-आधारित ढांचे में ढाल दिया है। परिणामस्वरूप, भारतीय संस्कृति, दर्शन और

ज्ञान की परंपराएं शिक्षा प्रणाली से हाशिए पर चली गईं। ऐसे में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** का उद्देश्य भारतीय शिक्षा में समग्र दृष्टिकोण को पुनः स्थापित करना है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश, जिसमें वेद, उपनिषद, योग, ध्यान, और भारतीय दर्शन शामिल हैं, यह दर्शाता है कि यह परंपराएँ न केवल सांस्कृतिक धरोहर हैं, बल्कि आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं। हालाँकि, औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा पद्धति को पश्चिमी दृष्टिकोण से प्रभावित किया गया, जिससे भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों की उपेक्षा होती गई। 21वीं सदी में, जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रहा है, तब यह आवश्यक हो गया कि भारतीय ज्ञान परंपरा को फिर से मुख्यधारा में लाया जाए।

इसी संदर्भ में, भारत सरकार ने **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** (NEP 2020) को प्रस्तुत किया, जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी बदलाव का संकेत है। यह नीति भारतीय शिक्षा के दृष्टिकोण को समग्र (holistic) और बहुआयामी बनाने का लक्ष्य रखती है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों का समावेश भी किया गया है। NEP 2020 का उद्देश्य न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना है, बल्कि छात्रों में सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का भी विकास करना है, जिससे वे समग्र रूप से प्रौढ़ नागरिक बन सकें। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों जैसे योग, संस्कार, भारतीय दर्शन, कला, और भाषा को शिक्षा के ढांचे में पुनः समाहित करने का प्रयास किया गया है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्थान मिल सकेगा। यह नीति विद्यार्थियों को केवल ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त, संवेदनशील और नैतिक नागरिक के रूप में विकसित करने की दिशा में काम करेगी

2. भारतीय ज्ञान परंपरा का संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें प्राचीन काल में समाहित हैं, जो न केवल दार्शनिक दृष्टिकोण और आस्थाओं का एक गहरा जाल है, बल्कि यह समाज, विज्ञान, कला, साहित्य और व्यवहारिक जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती रही है। भारतीय शिक्षा परंपरा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। यह परंपरा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली थी, जो आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक और सामाजिक दृष्टिकोण से मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर बल देती थी। भारत में ज्ञान की खोज और उसके अभ्यास की प्रक्रिया प्राचीन काल से ही व्यवस्थित और क्रमबद्ध थी, और यह एक दीर्घकालिक परंपरा के रूप में विकसित हुई। भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों, शास्त्रों और अन्य धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक ग्रंथों के माध्यम से हुआ। इसके साथ ही, भारतीय शिक्षा पद्धतियों में गुरु-शिष्य परंपरा, आध्यात्मिक शिक्षा, और विवेकपूर्ण चिंतन को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

वेदों और उपनिषदों का ज्ञान:

वेदों और उपनिषदों का ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव है। वेद, जो संस्कृत में रचित हैं, ब्रह्म, सत्य, धर्म, और जीवन के गहरे रहस्यों को समझने के लिए एक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। वेद चार हैं – **ऋग्वेद**, **यजुर्वेद**, **सामवेद**, और **अथर्ववेद**, जो न केवल धार्मिक और धार्मिक क्रियाओं से संबंधित हैं, बल्कि प्राचीन विज्ञान, चिकित्सा, गणित, और खगोलशास्त्र के बारे में भी जानकारी प्रदान करते हैं। उपनिषद वेदों के फलस्वरूप उत्पन्न दार्शनिक ग्रंथ हैं, जो आत्मा, ब्रह्म (सर्वव्यापक चेतना), और जगत के परस्पर संबंध को समझाने का प्रयास करते हैं। "तत्त्वमसि" (तुम वही हो) जैसे सूत्र, जो मानव और ब्रह्म के बीच अद्वितीय संबंध को व्यक्त करते हैं, भारतीय

ज्ञान परंपरा की विशेषता रहे हैं। उपनिषदों में ज्ञान के गहरे रूपों के साथ-साथ ध्यान, साधना, और आत्म-ज्ञान की महत्वता पर भी बल दिया गया है।

गुरु-शिष्य परंपरा:

भारतीय शिक्षा की एक और विशेषता गुरु-शिष्य परंपरा थी, जो प्राचीन समय में शिक्षा का केंद्रीय हिस्सा थी। यह परंपरा न केवल बौद्धिक शिक्षा तक सीमित थी, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक शिक्षा भी प्रदान करती थी। गुरु (शिक्षक) को न केवल ज्ञान का स्रोत माना जाता था, बल्कि एक मार्गदर्शक और जीवन के सही रास्ते पर चलने के लिए एक आदर्श के रूप में सम्मानित किया जाता था। शिष्य (विद्यार्थी) गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण और विनम्रता का पालन करते थे। इस प्रणाली में शिक्षा का स्थान सिर्फ कक्षा या पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं था, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक पहलू को समग्र रूप से समझने का एक तरीका था। गुरु-शिष्य परंपरा का मुख्य उद्देश्य शिष्य को न केवल बौद्धिक ज्ञान देना था, बल्कि उसे नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक करना था। यह परंपरा जीवन के सभी पहलुओं में विवेक, संतुलन, और सामाजिक समझ की शिक्षा देती थी।

भारतीय दर्शन और विज्ञान:

भारतीय दर्शन ने जीवन, ब्रह्म, आत्मा, और समाज के बारे में गहरे विचार प्रस्तुत किए हैं। भारतीय दर्शन के प्रमुख स्कूलों में **वेतांतिक** (Advaita Vedanta), **सांख्य** (Sankhya), **योग** (Yoga), **न्याय** (Nyaya), **वैशेषिक** (Vaisheshika), और **मिमांसा** (Mimamsa) शामिल हैं। इन स्कूलों ने न केवल धार्मिक विचारों को स्पष्ट किया, बल्कि उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया। भारतीय दर्शन में **योग** का विशेष स्थान है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करने के लिए एक समग्र प्रणाली प्रस्तुत करता है। योग केवल शारीरिक आसनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति, आत्म-निर्भरता, और जीवन के उच्चतम उद्देश्य को प्राप्त करने का एक माध्यम है। भारतीय ज्ञान परंपरा में **विज्ञान** भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन भारत में गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और रसायन शास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया था। **आर्यभट**, **भास्कराचार्य**, और **कल्पनिक विज्ञान** के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य वैज्ञानिकों ने दुनिया को न केवल शून्य (0) और दशमलव प्रणाली जैसी क्रांतिकारी अवधारणाएँ दीं, बल्कि ब्रह्मांड की संरचना, ग्रहों की गति, और ग्रहों के प्रभावों का भी गहराई से अध्ययन किया।

संस्कृत साहित्य और कला:

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू उसका साहित्य और कला से जुड़ा हुआ है। संस्कृत साहित्य में महाकाव्य जैसे **महाभारत** और **रामायण** ने न केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षा दी, बल्कि जीवन के आदर्शों, संघर्षों, और समाज में धर्म और अधर्म के बीच के भेद को भी स्पष्ट किया। इसके अलावा, भारतीय कला और नृत्य में भी ज्ञान की गहरी समझ का समावेश था। **कला** और **संगीत** को मानसिक शांति, आत्म-अभिव्यक्ति और ब्रह्मा के साथ एकाकार होने का साधन माना जाता था। यह भारतीय समाज के जीवन को एक समृद्ध, सांस्कृतिक, और आत्मिक दृष्टिकोण से जोड़ता था।

3. भारतीय शिक्षा पद्धति का उद्देश्य:

भारतीय ज्ञान परंपरा का अंतिम उद्देश्य मानवता की सेवा करना था। इसका उद्देश्य व्यक्ति को न केवल आत्म-ज्ञान से परिचित कराना था, बल्कि उसे एक अच्छा इंसान और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाना था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में ज्ञान का स्वरूप गहन और समग्र था, और यह प्रत्येक विद्यार्थी के भीतर आत्म-समर्पण, सेवा और नैतिकता के गुणों का संवर्धन करता था। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध, बहुआयामी और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो जीवन के हर पहलू को समझने और उसे एक उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित करने की शिक्षा देती है। यह परंपरा न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ में प्रासंगिक रही है, बल्कि समाज और विज्ञान के सभी क्षेत्रों में भी इसका योगदान महत्वपूर्ण है। भारतीय शिक्षा परंपरा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान का अर्जन नहीं था, बल्कि यह शिष्य को जीवन की सही दिशा, समाज के प्रति जिम्मेदारी और आत्म-निर्भरता की भावना भी प्रदान करती थी। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करना और उसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करना न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करेगा, बल्कि यह शिक्षा को अधिक समग्र, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाने में भी सहायक होगा।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि समाज में एक जिम्मेदार और नैतिक नागरिक का निर्माण करना था। भारतीय शिक्षा का उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार, समाज की सेवा, और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन एवं शांति की प्राप्ति था। समय के साथ, औपनिवेशिक शासकों और पश्चिमी प्रभावों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलने का प्रयास किया, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश कम हो गया।

इस संदर्भ में, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** (NEP 2020) का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनः समावेश किया गया है। NEP 2020 न केवल शिक्षा को अधिक समग्र (holistic) बनाने का प्रयास करती है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, संस्कारों, और दार्शनिक दृष्टिकोण को भी पुनर्जीवित करने का लक्ष्य रखती है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों को आधुनिक शिक्षा में समाहित करने का प्रयास करती है, जिससे छात्रों में न केवल बौद्धिक कौशल विकसित हो, बल्कि वे एक नैतिक, सामाजिक और मानसिक दृष्टिकोण से भी सशक्त बनें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य और दृष्टिकोण

NEP 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में समग्र और एकीकृत सुधार लाना है। इस नीति के तहत, शिक्षा को केवल ज्ञान के भंडारण से ज्यादा जीवन के समग्र विकास का माध्यम माना गया है। नीति में छात्रों के शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसके अतिरिक्त, यह नीति भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है और उन्हें शिक्षा के प्रणाली में समाहित करने का प्रयास करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:

1. **समग्र शिक्षा (Holistic Education):** NEP 2020 समग्र शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिसमें केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास को भी महत्व दिया जाता है। भारतीय शिक्षा परंपरा का यह महत्वपूर्ण पहलू था कि शिक्षा न केवल ज्ञान का खजाना था, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती थी।
2. **भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश:** यह नीति भारतीय संस्कृति, ज्ञान और दार्शनिक दृष्टिकोण को शिक्षा के मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है। भारतीय दर्शन, संस्कार, योग, और ध्यान जैसे तत्वों को शिक्षा प्रणाली में स्थान दिया गया है, ताकि छात्रों को जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए तैयार किया जा सके।
3. **सांस्कृतिक जागरूकता और बहुलतावाद:** NEP 2020 में भारतीय भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं के महत्व को बढ़ावा देने की बात की गई है। यह नीति भारतीय विविधताओं को सम्मान देती है और विभिन्न भाषाओं, कला रूपों, और संस्कृतियों को शिक्षा के क्षेत्र में समाहित करने का प्रयास करती है।
4. **टेक्नोलॉजी और इनोवेशन:** तकनीकी सुधार के साथ-साथ NEP 2020 भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास करती है, ताकि छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सके। हालांकि, यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीकी परिवेश में भी प्रासंगिक बनाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। यह नीति भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण, संस्कार, और पारंपरिक ज्ञान को समाहित करने के माध्यम से छात्रों में गहरी सोच, आत्म-निर्भरता, और सामाजिक दायित्व का अहसास कराने का प्रयास करती है।

- **संस्कार आधारित शिक्षा:**

  भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा शिक्षा को केवल बौद्धिक क्षमता के बढ़ाने का नहीं, बल्कि संस्कार और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का भी माध्यम माना है। NEP 2020 में शिक्षा को जीवन के सभी पहलुओं से जोड़ने की बात की गई है, जिसमें छात्रों को न केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त हो, बल्कि वे नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी सशक्त बनें। यह नीति बच्चों में समाज के प्रति जिम्मेदारी, सहिष्णुता, और सहकार्य जैसे गुणों को विकसित करने की दिशा में काम करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा, संस्कारों की शिक्षा, और जीवन के सर्वोत्तम उद्देश्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया का समावेश था। यही दृष्टिकोण NEP 2020 में भी देखा जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को एक अच्छे नागरिक और समाज में बदलाव लाने वाले व्यक्ति के रूप में तैयार करने पर बल दिया गया है।

- **योग और ध्यान:**

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग और ध्यान का विशेष महत्व है, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि मानसिक और आत्मिक शांति का भी मार्ग है। NEP 2020 में योग और ध्यान को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अनिवार्य बनाने की बात की गई है। यह भारतीय शिक्षा की समग्रता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। योग न केवल शरीर के लिए, बल्कि मस्तिष्क और आत्मा के लिए भी एक संतुलन बनाए रखने का माध्यम है। इस परंपरा को NEP 2020 के तहत पुनः शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने का प्रयास किया गया है।

- **भारतीय भाषाओं और साहित्य का सम्मान:**

NEP 2020 में भारतीय भाषाओं के महत्व को बढ़ावा देने की बात की गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विभिन्न भाषाओं का योगदान रहा है, विशेष रूप से संस्कृत, प्राकृत, और अन्य भारतीय भाषाएँ। नीति के अंतर्गत, शिक्षा को मातृभाषा या स्थानीय भाषाओं में देने की सिफारिश की गई है, ताकि छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर और स्थानीय ज्ञान से जुड़ने का अवसर मिल सके। भारतीय साहित्य और कला के प्रति भी सम्मान बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं, जो भारतीय संस्कृति और विचारों को जीवित रखने में मदद करेंगे।

- **विविधता और समावेशिता:**

भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा विविधता और समावेशिता को महत्व दिया है। NEP 2020 भी इस दृष्टिकोण को अपनाती है। नीति में विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं, और संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समझ को बढ़ावा देने की बात की गई है। भारतीय समाज की विविधता को समझते हुए, शिक्षा प्रणाली में इस विविधता का सम्मान किया गया है, जो छात्रों को एक समग्र, बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करती है।

- **आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण:**

भारतीय शिक्षा प्रणाली ने जीवन के उद्देश्य, आत्मा, ब्रह्म और नैतिकता के प्रश्नों पर गहरी सोच को प्रोत्साहित किया। NEP 2020 में इस विचारधारा को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया है, ताकि छात्र न केवल बौद्धिक रूप से सशक्त बनें, बल्कि वे जीवन के गहरे अर्थों और आत्मिक शांति को भी समझ सकें। भारतीय दर्शन और तत्त्वज्ञान का समावेश शिक्षा में छात्रों को मानसिक और नैतिक दृष्टिकोण से मजबूत बनाएगा।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश न केवल भारतीय संस्कृति और धरोहर को संरक्षित करने का एक प्रयास है, बल्कि यह शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र और सशक्त बनाने का एक मार्गदर्शन भी है। NEP 2020 में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण, संस्कार, योग, और विविधता को सम्मान देने की जो दिशा अपनाई गई है, वह भारतीय शिक्षा को पुनः उसके मूल रूप में स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति छात्रों को न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि मानसिक, शारीरिक, और आत्मिक

रूप से भी सशक्त बनाने की दिशा में काम करती है, जिससे वे जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित रूप से समझ सकें और एक आदर्श नागरिक बन सकें। भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों का समावेश NEP 2020 के माध्यम से शिक्षा में एक गहरा और समृद्ध परिवर्तन ला सकता है, जो भविष्य में एक बेहतर, जागरूक और जिम्मेदार समाज के निर्माण में सहायक होगा।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्त्रोत वेद, उपनिषद, संस्कृत साहित्य, और प्राचीन भारतीय दर्शनशास्त्र हैं। भारतीय विद्वान और ज्ञान की खोज में लगे शिक्षकों ने शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास के संदर्भ में सशक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। **गुरु-शिष्य परंपरा**, **योग**, **ध्यान**, और **विवेक** जैसे तत्व भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न हिस्सा थे। इसके अलावा, **आध्यात्मिक शिक्षा**, **सामाजिक समरसता**, और **समानता** की दिशा में भारतीय शिक्षाएं गहरी दृष्टिकोण से जुड़ी हुई थीं। भारतीय शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि यह आत्मज्ञान, समग्र व्यक्तित्व विकास, और समाज की सेवा के लिए भी था। **समाजशास्त्र**, **गणित**, **आधुनिक चिकित्सा**, **भौतिकी**, और **संगीत** जैसे विविध क्षेत्रों में भारत ने न केवल महान योगदान दिया था, बल्कि एक सामाजिक और सामूहिक दृष्टिकोण से शिक्षा को प्रस्तुत किया था, जो आज भी प्रासंगिक है।

समय के साथ वैश्वीकरण, औपनिवेशिक प्रभाव, और आधुनिकतावादी दृष्टिकोणों के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा है। वर्तमान समय में जब विज्ञान और तकनीकी विकास के क्षेत्र में तीव्र बदलाव हो रहे हैं, तो भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने और समाज में एक सकारात्मक योगदान देने के लिए नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

- ***वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभाव:***

  वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में पश्चिमी संस्कृति, शिक्षा पद्धतियों, और जीवनशैली का व्यापक प्रभाव डाला है। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली, जो व्यावहारिक और साक्षरता आधारित है, ने भारतीय ज्ञान परंपरा को गौण कर दिया है। विशेष रूप से, **पश्चिमी विज्ञान**, **तकनीकी ज्ञान**, और **उद्यमिता** की ओर झुकाव ने पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को अप्रासंगिक बना दिया है। अनेक भारतीय छात्र और युवा पश्चिमी शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं, जबकि भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण, संस्कृत साहित्य, और योग जैसे तत्वों की उपेक्षा करते हैं। यह स्थिति भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक संतुलन की कमी को उत्पन्न करती है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण और विस्तार मुश्किल हो जाता है।

- ***पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों की उपेक्षा:***

  भारत में प्राचीन काल में गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से शिक्षा का प्रेषण हुआ करता था, जिसमें गहरे दार्शनिक और सामाजिक मूल्यों का विकास किया जाता था। लेकिन आज की शिक्षा प्रणाली में अधिकतर रटने और परीक्षा आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाता है, जो शिष्य के समग्र विकास के लिए सीमित और संकीर्ण है। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ जानकारी का संग्रहण नहीं था, बल्कि यह मनुष्य के जीवन के उद्देश्य, आत्म-साक्षात्कार और सामाजिक दायित्व के बारे में भी था। आज के युग में, जब

भारतीय शिक्षा पद्धतियों को व्यावसायिकता और बाजारवाद से जोड़ा जा रहा है, तो इस समग्र दृष्टिकोण की कमी महसूस हो रही है।

- ***सांस्कृतिक विस्मृति:***

भारत में सांस्कृतिक विविधता का समृद्ध इतिहास रहा है, और भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा सांस्कृतिक समझ और समावेशिता पर जोर दिया है। लेकिन आजकल की तेजी से बदलती सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में सांस्कृतिक धरोहर की उपेक्षा हो रही है। भारत में, संस्कृत, प्राचीन भारतीय साहित्य, और भारतीय दर्शन के अध्ययन में गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप, युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा से पूरी तरह से अनभिज्ञ हो रही है, जो एक बड़ी चुनौती है। इसके साथ ही, भारतीय भाषा, कला, और शिल्प भी अब पश्चिमी प्रभावों के कारण पिछड़ते जा रहे हैं।

- ***विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास से टकराव:***

आज के समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने दुनिया को एक नई दिशा दी है, लेकिन कई बार भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और आधुनिक विज्ञान के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद, योग और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। हालाँकि, आयुर्वेद और योग जैसे प्राचीन भारतीय ज्ञान ने अपनी प्रभावशीलता को सिद्ध किया है, फिर भी इन विधाओं को आधुनिक चिकित्सा के समकक्ष मान्यता नहीं मिल पाई है। यह स्थिति भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता पर सवाल उठाती है।

- ***शिक्षा में एकरूपता:***

आज के समय में, शिक्षा में एकरूपता और वैश्विकता पर जोर दिया जा रहा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं को समान रूप से अनुकूलित किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों का महत्व कम हो रहा है। समाज में समानता और सामाजिक न्याय के लिए भारतीय परंपराओं ने जो दर्शन प्रस्तुत किया था, वह आज के शिक्षा के ढांचे में अधिक स्पष्ट नहीं होता। इसके बजाय, शिक्षा का उद्देश्य अधिक से अधिक व्यावसायिक सफलता और वित्तीय उपलब्धियों की ओर मोड़ा जा रहा है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य उद्देश्य के विपरीत है।

6.भारतीय ज्ञान परंपरा को समकालीन चुनौतियों से बचाने के लिए उपाय

भारतीय ज्ञान परंपरा, जो प्राचीन काल से लेकर आज तक हमारे समाज, संस्कृति और शिक्षा का अभिन्न हिस्सा रही है, समकालीन चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों में वैश्वीकरण, पश्चिमी प्रभाव, सांस्कृतिक उपेक्षा, और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास से उत्पन्न संकट शामिल हैं। हालांकि, भारतीय ज्ञान परंपरा में गहरी दार्शनिकता, समग्रता और जीवन के सभी पहलुओं का संतुलित विकास करने की क्षमता है, जो आज के समय में भी प्रासंगिक हो सकती है। समकालीन चुनौतियों से बचने और भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः सशक्त बनाने के लिए कुछ उपाय दिए गए हैं:

भारतीय शिक्षा प्रणाली में समग्र दृष्टिकोण को पुनः स्थापित करना

भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र (holistic) विकास को लक्ष्य बनाता था। भारतीय शिक्षा का विचार समाज और व्यक्तित्व के हर पहलू को संतुलित रूप से विकसित करना था, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व दिया गया था।

- **स्मार्ट और समग्र शिक्षा मॉडल:** भारतीय शिक्षा को व्यावसायिक और परीक्षा आधारित प्रणाली से बाहर निकालकर एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिसमें छात्रों के बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, और नैतिक विकास पर ध्यान दिया जाए।
- **योग और ध्यान को शिक्षा प्रणाली में शामिल करना:** शिक्षा के पाठ्यक्रम में योग, ध्यान, और आंतरिक शांति को अनिवार्य रूप से शामिल करना चाहिए। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा है, जो मानसिक शांति, संतुलन, और आत्म-निर्भरता को बढ़ावा देता है।

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और दार्शनिक दृष्टिकोण का संरक्षण और प्रसार

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण पहलू उसकी सांस्कृतिक धरोहर और दार्शनिक विचार हैं। भारत का सांस्कृतिक इतिहास बहुत समृद्ध है, जिसमें **संस्कृत**, **योग**, **आध्यात्मिक शिक्षा**, और **गुरु-शिष्य परंपरा** जैसी प्राचीन परंपराएँ शामिल हैं। समकालीन समय में इन परंपराओं की उपेक्षा हो रही है, जबकि इन्हें और अधिक प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है।

- **भारतीय साहित्य, संस्कृत और दर्शन का पुनः अध्ययन:** भारतीय संस्कृत साहित्य, वेद, उपनिषद, और महाकाव्यों का पाठ्यक्रम में समावेश किया जाना चाहिए। यह न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित करेगा, बल्कि छात्रों को जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य के बारे में जागरूक करेगा।
- **दर्शन और आध्यात्मिक शिक्षा का महत्व:** भारतीय दर्शन (जैसे अद्वैत वेदांत, सांख्य, और योग) को आधुनिक शिक्षा में समाहित करने की आवश्यकता है। यह छात्रों को जीवन के व्यापक दृष्टिकोण को समझने, आत्म-ज्ञान प्राप्त करने, और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करेगा।

भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना और संरक्षित करना

भारतीय ज्ञान परंपरा का बहुत बड़ा हिस्सा भारतीय भाषाओं में निहित है। संस्कृत, प्राकृत, तमिल, बंगाली, हिंदी, और अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले साहित्य, दर्शन, और विज्ञान की विद्यमान परंपरा है। हालांकि, वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभाव के कारण भारतीय भाषाओं का महत्व कम हो रहा है।

- **भारतीय भाषाओं का पाठ्यक्रम में समावेश:** छात्रों को भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने के लिए पाठ्यक्रम में भारतीय भाषाओं का समावेश किया जाना चाहिए। यह न केवल भाषा कौशल को बढ़ावा देगा, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के अन्य पहलुओं को समझने में भी मदद करेगा।
- **संस्कृत और अन्य प्राचीन भाषाओं का पुनः प्रसार:** संस्कृत, पाली और प्राकृत जैसी प्राचीन भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों में इन भाषाओं की पढ़ाई और शोध को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय

भारतीय ज्ञान परंपरा में **आयुर्वेद**, **वास्तु शास्त्र**, **ज्योतिष**, **योग**, और **संगीत** जैसे पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्र शामिल हैं, जिन्हें आज की आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का विज्ञान और तकनीकी दृष्टिकोण से समर्थन मिल सकता है, जिससे इनकी विश्वसनीयता और प्रभाव बढ़ेगा।

- **आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ना:** आयुर्वेद, योग, और ध्यान की पारंपरिक पद्धतियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन और प्रमाणित किया जाना चाहिए। यह पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को वैज्ञानिक समाज में स्वीकार्यता दिलाने में मदद करेगा।
- **पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर शोध और विकास:** भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न क्षेत्रों पर शोध को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में विशेष शोध परियोजनाएँ बनाई जा सकती हैं।

शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा को शामिल करना

भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा शिक्षा को एक नैतिक और समाजिक दायित्व के रूप में देखा है। आज के समय में जब शिक्षा में केवल व्यावसायिक सफलता पर अधिक जोर दिया जा रहा है, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम भारतीय परंपराओं के उन मूल्य-आधारित तत्वों को पुनः शिक्षा में शामिल करें जो समाज और व्यक्तित्व के संतुलित विकास में मदद कर सकते हैं।

- **मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली:** भारतीय शिक्षा पद्धति में नैतिकता, आत्म-निर्भरता, समाज सेवा, और न्याय जैसे मूल्य-आधारित तत्वों का समावेश किया जाना चाहिए। यह छात्रों को न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि मानसिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाएगा।
- **गुरु-शिष्य परंपरा का पुनरुद्धार:** शिक्षा को एक प्रकार की जीवन-गुरुता के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए, जिसमें गुरु-शिष्य परंपरा के तत्वों को पुनः जीवन में लाया जाए। यह विद्यार्थियों में जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण और समाज के प्रति दायित्व का पालन करने की भावना विकसित करेगा।

भारतीय संस्कृति और ज्ञान का वैश्विक मंच पर प्रचार

भारतीय ज्ञान परंपरा को न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रचारित और प्रसारित करने की आवश्यकता है। आज के समय में जब दुनिया में विविधता और बहुलवाद को महत्व दिया जा रहा है, भारतीय संस्कृति और ज्ञान के तत्वों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

- **वैश्विक मंच पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार:** भारतीय संस्कृति, योग, और भारतीय दर्शन को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, संगठनों, और संगोष्ठियों के माध्यम से जागरूकता फैलाई जानी चाहिए।
- **संस्कृत और भारतीय विद्याओं का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** भारतीय विद्याओं, जैसे संस्कृत, योग, आयुर्वेद, और दर्शन को अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में पाठ्यक्रम के रूप में पेश किया जा सकता है।

इससे न केवल भारतीय संस्कृति को सम्मान मिलेगा, बल्कि इससे वैश्विक समुदाय में भारतीय ज्ञान परंपरा की स्वीकार्यता भी बढ़ेगी।

7. निष्कर्ष:

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को नकारा नहीं जा सकता। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** ने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को स्वीकार किया है और इसे आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। यह नीति भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान, संस्कार, और नैतिक शिक्षा को पुनः शिक्षा के केंद्र में लाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि इसका सही तरीके से कार्यान्वयन किया जाता है, तो भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा प्रणाली को समग्र, सशक्त और प्रासंगिक बना सकती है, जो आज की दुनिया में अत्यधिक आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा का समृद्ध इतिहास और गहरी धार्मिक, दार्शनिक, और वैज्ञानिक समझ है, जो आज भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हालाँकि, समकालीन चुनौतियाँ इसे अप्रासंगिक बना सकती हैं, लेकिन यदि हम इसे आधुनिक संदर्भ में पुनः प्रासंगिक बना सकें, तो यह हमारे समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर बन सकती है। हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को न केवल सम्मान देना चाहिए, बल्कि इसे नए समय की जरूरतों के अनुसार पुनः आकार देना चाहिए।

संदर्भ:

देसाई, एम. (2021). *भारतीय शिक्षा और उसकी समकालीन चुनौतियाँ: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण*। एकेडमिक प्रेस।

शर्मा, ए., & सिंह, पी . (2020). आधुनिक शिक्षा में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं की प्रासंगिकता पर पुनर्विचार। *भारतीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका*, 45(3), 180-195।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारत में शिक्षा के भविष्य के लिए रूपरेखा*। भारत सरकार।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2020). *आधुनिक शिक्षा में पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का समावेश: चुनौतियाँ और अवसर*। NCERT।

गुप्ता, आर., & कुमार, एस. (2019). भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समकालीन शिक्षा में समावेश: चुनौतियाँ और समाधान। *राष्ट्रीय शैक्षिक सम्मेलन की कार्यवाही* (पृ. 45-60)। भारतीय शिक्षा समाज।

राव, एस., & अय्यर, आर. (संपा.)। (2018). *आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान परंपराओं की पुनर्व्याख्या*। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।